INDIAN EPISTEMOLOGY

भारतीय ज्ञानमीमांसा

सेमेस्टर–1 आधारभूत पत्र

(PHI-F-101)

प्रथम पत्र

पूर्णांक–70+30 पाठ्यक्रमांश (क्रेडिट)–05 समय–3 घंटे

विद्यार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि वे नौ प्रश्नों में से
किन्हीं पाँच प्रश्नों का उत्तर दें।

1. ज्ञान : परिभाषा एवं स्वरूप : प्रमा और अप्रमा, प्रमा और उसके वर्गीकरण।
2. प्रामाण्य : स्वरूप एवं परिभाषाएँ, स्वतः प्रामाण्यवाद, परतः प्रामाण्यवाद।
3. प्रमाणों का संक्षिप्त अध्ययन : प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, अर्थापत्ति, अनुपलब्धि।
4. भ्रम के सिद्धांत (ख्यातिवाद) : अख्याति, अन्यथाख्याति, विपरीतख्याति, आत्मख्याति, असत्ख्याति, अनिर्वचनीयख्याति, सत्ख्याति, सदासत्ख्याति।
5. प्रमाण–व्यवस्था और प्रमाण–सम्प्लव से संबंधित वाद–विवाद।
6. शब्द–प्रमाण की विशेष भूमिका।

अनुशंसित ग्रंथ (Suggested Readings) :–

1. Debabrata Sen : The Concept of Knowledge, Calcutta, 1984.
2. Swami Satprakasananda : Methods of Knowledge, London, 1965.
3. D. M. Datta : The Six Ways of Knowing, Calcutta, 1960.
4. Govardhan P. Bhatt : Epistemology of the Bhatta School of Purva Mimansa, Varanasi 1962.
5. P. S. Sastri : Indian Idealism, Vol. I & II, Delhi 1975-76.
6. J. N. Mohanty : Gangesa's Theory of Truth, Visva Bharti, 1966.
7. B. K. Matilal : Perception, Oxford University Press, 1986.
8. Srinivasa Rao : Perceptual Error : The Indian Theories, University Press of Hawaii, Honolulu, 1998.
9. Dharmakirti : Nyayabindu.

WESTERN EPISTEMOLOGY

पाश्चात्य ज्ञानमीमांसा

सेमेस्टर–1 कोर पत्र

(PHI-C-102)

द्वितीय पत्र

पूर्णांक–70+30 पाठ्यक्रमांश (क्रेडिट)–05 समय–3 घंटे

विद्यार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि वे नौ प्रश्नों में से
किन्हीं पाँच प्रश्नों का उत्तर दें।

1. संदेहवाद और ज्ञान की संभावना।
2. ज्ञान का स्वरूप और परिभाषा।
3. गेटियर समस्या और उसके प्रत्युत्तर।
4. ज्ञानमूलक–दावों की प्रामाणिकता एवं ज्ञानात्मक निर्णय, आधारिकतावाद, संसक्ततावाद, कारणमूलक सिद्धांत, विश्वसनीयतावाद।
5. प्रत्यक्षीकरण के सिद्धांत।
6. स्मृति की समस्या : अतीत का ज्ञान।
7. अन्य मन का ज्ञान।
8. सत्यता के सिद्धांत : स्वतः–प्रामाणिकता, संवादिता, संसक्तता, व्यावहारिकता, शब्दार्थशास्त्रीय।
9. प्रागनुभविक ज्ञान; विश्लेषणात्मक एवं संश्लेषणात्मक; अनिवार्य एवं आपातिक; संश्लेषणात्मक–प्रागनुभविक।

अनुशंसित ग्रंथ (Suggested Readings) :–

1. K. Lehrer : Knowledge.
2. R. M. Chisholm : Theory of Knowledge.
3. A. J. Ayer : The Problem of Knowledge.
4. A. C. Danto : Analytical Philosophy of Knowledge.
5. J. Hintikka : Knowledge and Belief.
6. B. Russell : Human Knowledge : Its Scope and Limits.
7. N. Rescher : Coherence Theory of Truth.
8. S. Bhattacharya : Doubt, Belief and Knowledge.
9. D. P. Chattopadhyaya : Induction, Probability, Scepticism.
10. J. L. Pollock : Knowledge and Justification.
11. A. Stroll (Ed.) : Epistemology : New Essays in the Theory of Knowledge.
12. L. Wittgenstein : On Certainty.

INDIAN METAPHYSICS

भारतीय तत्त्वमीमांसा

सेमेस्टर–1 कोर पत्र

(PHI-C-103)

तृतीय पत्र

पूर्णांक–70+30 पाठ्यक्रमांश (क्रेडिट)–05 समय–3 घंटे

विद्यार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि वे नौ प्रश्नों में से
किन्हीं पाँच प्रश्नों का उत्तर दें।

1. प्रमेय : पदार्थ
2. तत्त्वमीमांसा के आधारभूत सामान्य कोटियों के रूप में मानव, ईश्वर और जगत्।
3. परम सत् : सत् एवं संभूति
4. ईश्वर : जनसाधारण का ईश्वर एवं दार्शनिकों का ईश्वर; शास्त्रीय संप्रदायों की विश्व–दृष्टियों में ईश्वर की भूमिका।
5. मानव : आत्म के रूप में स्व; नैरात्म्यवाद; आत्मा और जीव; कर्त्ता, भोक्ता और ज्ञाता के रूप में जीव : विभिन्न परिप्रेक्ष्य।
6. भौतिक जगत् : कर्मभूमि के रूप में जगत्; भौतिक जगत् का स्वरूप और संरचना; पाँच तत्त्वों का सिद्धांत (पंचभूत), गुण और पंचीकरण; व्यावहारिक और पारमार्थिक सत्ता।
7. मानव मन
8. सामान्य : विभिन्न दार्शनिक संप्रदायों के मध्य वाद–विवाद।
9. कारणता : विभिन्न दार्शनिक संप्रदायों के मत एवं वाद–विवाद।

अनुशंसित ग्रंथ (Suggested Readings) :–

1. Stephen H. Phillips : Classical Indian Metaphysics. Delhi: Motilal Banarsidas, 1997.
2. Jadunath Sinha : Indian Realism. London, Kegan Paul, 1938.
3. P. K. Mukhopadhyaya : Indian Realism. Calcutta: K. P. Bagchi, 1984.
4. Harsh Narain : Evolution of the Nyaya-Vaisesika Categoriology. Varanasi, Bharati Prakashan, 1976.
5. Sadananda Bhaduri : Nyaya Vaisesika Metaphysics.
6. Jayarasi Bhatta : Tattvopaplavasimha.
7. S. L. Pandey : Bhartiya Darshan ka Sarvekchhan. Central Publishing House, Allahabad.
8. S. N. Dasgupta : Bhartiya Darshan ka Itihas. Hindi Granth Academy, Rajsthan, Vol.1-5.
9. S. Radhakrishnan : Bhartiya Darshan. Vol. 1-2, Motilal Banarsidas
10. C. D. Sharma : Bhartiya Darshan: Aalochana and Anushilan. Motilal Banarsidas.
11. M. Hiriyanna : Outlines of Indian Philosophy. Motilal Banarsidas.

WESTERN METAPHYSICS

पाश्चात्य तत्त्वमीमांसा

सेमेस्टर–1 कोर पत्र

(PHI-C-104)

चतुर्थ पत्र

पूर्णांक–70+30 पाठ्यक्रमांश (क्रेडिट)–05 समय–3 घंटे

विद्यार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि वे नौ प्रश्नों में से
किन्हीं पाँच प्रश्नों का उत्तर दें।

1. तत्त्वमीमांसा : संभावना, क्षेत्र और सरोकार।
2. आभास और सत्।
3. सत् एवं संभूति; सार और अस्तित्व।
4. द्रव्य : अरस्तू, बुद्धिवादियों और अनुभवादियों के अनुसार; सत्ता के विषय में प्रक्रियावादी विचार।
5. कारणताः कारणता और नियमितता।
6. क) दिक् – स्वरूप और आयाम; सिद्धांत : निरपेक्ष और सापेक्षिक, आभास और सत्।
   ख) काल – स्वरूप और दिशा, काल–पथ, सिद्धांत : निरपेक्ष और सापेक्षिक, आभास और सत्।
7. सामान्य और विशेष : विभेद; प्रकार; अमूर्त्त तत्त्व; नामवाद : सादृश्य, वर्ग; वस्तुवाद।
8. मन और शरीर : समसामयिक विवाद।

अनुशंसित ग्रंथ (Suggested Readings) :–

1. F. H. Bradley : Appearance and Reality, Oxford.
2. Richard Taylor : Metaphysics, Prentice-Hall.
3. Richard Swinburne : Space and Time, Methuen.
4. H. M. Bhattacharya : Problems of Western Philosophy.
5. Y. Masih : Paschatya Darshan ki Samikshatmaka Vyakhya.
6. Blackwell : Companion to Contemporary Philosophy of Mind.
7. David Hales (Ed.) : Metaphysics: Contemporary Readings.
8. H. N. Mishra : Samkalin Paschatya Darshan.

SCIENTIFIC METHOD

वैज्ञानिक पद्धति

सेमेस्टर–II कौशल विकास

(PHI-S-205)

पंचम पत्र

पूर्णांक–70+30 पाठ्यक्रमांश (क्रेडिट)–05 समय–3 घंटे

विद्यार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि वे नौ प्रश्नों में से

किन्हीं पाँच प्रश्नों का उत्तर दें।

1. भूमिका : दर्शन और विज्ञान के संबध की प्रकृति; ज्ञानमीमांसा की एक शाखा के रूप में विज्ञान–दर्शन।
2. सिद्धांत और व्याख्या : वैज्ञानिक सिद्धांतों की प्रकृति और भूमिका; व्याख्या एवं भविष्यवाणी; व्याख्या बनाम समझ।
3. तर्कीय प्रत्यक्षवाद और विज्ञान की पद्धति : सत्यापनीयता और विज्ञान एवं अ–विज्ञान के मध्य सीमांकन; तर्कीय प्रत्यक्षवाद की कठिनाईयाँ, आगमन की समस्या, निरीक्षण की सिद्धांत पर निर्भरता।
4. मिथ्यापनीयतावाद : पॉपर का सीमांकन के सिद्धांत के रूप में मिथ्यापनीयता, सोपाधिक–निगमनवाद; लाकाटोस का रिसर्च प्रोग्राम की धारणा और सुविकसित मिथ्यापनीयतावाद।
5. विज्ञान विषयक ऐतिहासिक एवं समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य : विज्ञान संबंधी कूह्न का परिप्रेक्ष्य, प्रतिमान की धारणा, प्री–साइन्स एवं नार्मल साइन्स के मध्य विभेद, एनोमली एवं क्राइसिस, वैज्ञानिक क्रांति और विज्ञान की प्रगति।

अनुशंसित ग्रंथ (Suggested Readings) :–

1. Anthony O'Hear : Introduction to the Philosophy of Science, Oxford: Clarendon Press, 1989.
2. Carl G. Hempel : Philosophy of Natural Science (Foundation of Philosophy Series), New Jersey: Prentice-Hall, 1966.
3. Janet A. Kourany : Scientific Knowledge: Basic Issues in the Philosophy of Science, Belmont: Wadsworth Publishing Co., 1998.
4. Thomas Kuhn : Structure of Scientific Revolutions, Chicago: University of Chicago Press, 1970.
5. Karl R. Popper : Conjectures and Refutations: The Growth of Scientific Knowledge, London : Routledge & Kegan Paul, 1963.
6. Karl R. Popper : The Logic of Scientific Discovery, London: Hutchinson & Co., 1959.
7. George Couvalis : The Philosophy of Science: Science and Objectivity, London: Sage Publications, 1997.
8. Cohen, M. R. & Nagel, E : An Introduction to Logic & Scientific Method, Allied Pub.

WESTERN ETHICS

पाश्चात्य नीतिशास्त्र

सेमेस्टर–II पत्र–कूट

(PHI-C-206)

षष्ठ पत्र

पूर्णांक–70+30 पाठ्यक्रमांश (क्रेडिट)–05 समय–3 घंटे

विद्यार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि वे नौ प्रश्नों में से
किन्हीं पाँच प्रश्नों का उत्तर दें।

खण्ड I : तथ्य/मूल्य

1. ए० जे० एयर का 'संवेगवाद', ए०जे० एयर की पुस्तक 'लैंग्वेज, टूथ एण्ड लॉजिक'
2. आर० एम० हेयर का 'परामर्शवाद : आचारशास्त्र एवं नैतिकता की संरचना', आर० एम० हेयर की पुस्तक 'एस्सेज इन एथिकल थ्योरी', ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1989

खण्ड I के लिये पाठ्य–सामग्री :

1. आर० एम० हेयर : द लैंग्वेज ऑफ मोरल्स, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1952
2. सी० एल० स्टीवेन्सन : एथिक्स एंड लैंग्वेज, न्यू हेवेन : येल यूनिवर्सिटी प्रेस, 1944

खण्ड II : नैतिक संदेहवाद

1. जे० एल० मैकी : मूल्यों की आत्मनिष्ठता। जे० एल० मैकी की पुस्तक 'एथिक्स : इन्वेनटिंग राइट एण्ड रॉंग', हारमन्डसवर्थ : पेंग्विन 1977
2. जेम्स रैचेल : सांस्कृतिक सापेक्षतावाद की समस्या। जेम्स रैचेल की पुस्तक 'एलिमेंट्स ऑफ मोरल फिलॉसफी', न्यूयार्क : मैकग्रो–हिल, 1978

खण्ड II के लिये पाठ्य–सामग्री :

1. ज्योफ्रे सायर – मैकोर्ड (संपादित) : एस्सेज इन मोरल रियलिस्म, इथाका : कॉरनेल यूनिवर्सिटी प्रेस, 1988
2. वाल्टर सिनॉट – आर्मस्ट्रांग एण्ड मार्क टिमोंस (संपादित) : मोरल ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1966

खण्ड III : कांटवाद

1. ओनोरा ओ' नील : कांट का साध्य की प्रमुखता का सिद्धांत उनकी पुस्तक 'एनडिंग वर्ल्ड हंगर इन 'मैटर्स ऑफ लाइफ एण्ड डेथ'
2. थॉमस नगेल : 'नैतिक भाग्य', उनकी पुस्तक 'मोरल क्वेश्चंस' से

खण्ड III के लिये पाठ्य–सामग्री :

1. फ्रेड फेल्डमैन : इंट्रोडक्टरी एथिक्स, प्रेंटिस हॉल, 1978
2. सी० ई० हैरिस : एप्लाइड मोरल थ्योरिज, वैड्सवर्थ, 1986
3. ए० मैकिन्टायर : आफ्टर वर्च्यू, ऑक्सफोर्ड : ब्लैकवैल, 1974
4. बी० विलियम्स : एथिक्स एण्ड द लिमिट्स ऑफ फिलॉसफी, लंदन, फोन्टाना, 1985

खण्ड IV : उपयोगितावाद :

1. जे० जे० सी० स्मार्ट : अति एवं संयमित उपयोगितावाद, फिलॉसॉफिकल क्वार्टरली' से पुनः प्रकाशित IV : 25,1956
2. वर्नर्ड विलियम्स : 'उपयोगितावाद के विरोध में' यूटिलिटेरियनिस्म फॉर एण्ड एगेन्स्ट, कैंब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस 1973 से

खण्ड IV के लिये पाठ्य–सामग्री :

1. आर० एम० हेर : मोरल थिंकिंग, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1991
2. जे० जे० सी० स्मार्ट एण्ड बी विलियम्स : यूटिलिटेरियनिस्म : फॉर एंड एगेंस्ट, कैंब्रिज : कैंब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1973

खण्ड V : अधिकार और न्याय :

1. जोयल फाइनबर्ग : 'द नेचर एंड वैल्यू ऑफ राइट्स', रिप्रिन्टेड फ्रॉम द जर्नल ऑफ वैल्यू इन्क्वाइरी, 4, 1970
2. जॉन रॉल्स : 'ए लिबरल थ्योरी ऑफ जस्टिस', फ्रॉम जॉन रॉल्स ए लिबरल थ्योरी ऑफ जस्टिस, मैस० : हारवर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1971

खण्ड V के लिये पाठ्य–सामग्री :

1. थॉमस नेगेल : इक्वलिटी एण्ड पार्सियलिटी, ऑक्सफोर्ड : ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1991

खण्ड VI : सद्गुण आचारशास्त्र :

1. ए० मैकिन्टायर : 'द नेचर ऑफ वर्च्यूस', फ्रॉम ए० मैकिन्टायर, आफ्टर वर्च्यू, यूनिवर्सिटी ऑफ नाट्रे डम प्रेस, 1981
2. जेम्स रैचेल्स : 'द एथिक्स ऑफ वर्च्यू', फ्रॉम जेम्स रैचेल्स, द एलिमेन्टस ऑफ मॉरल फिलॉसफी, न्यूयॉर्क : मैक्ग्रा–हिल, 1978

खण्ड VI के लिये पाठ्य–सामग्री :

1. जी० ई० एम० एन्सकोम्बे : 'मॉडर्न मॉरल फिलॉस्फी', फिलॉस्फी 33, 1958
2. ए० मैकिन्टायर : 'आफ्टर वर्च्यू', इंडियाना : यूनिवर्सिटी ऑफ नाट्रे डम प्रेस, 1981

अग्रगामी अनुशंसित पाठ्य–सामग्री :

1. लुइस पॉजमैन (सं०) : एथिकल थ्योरी : क्लासिकल एण्ड कन्टेम्पोरारी रीडिन्ग्स, बेलमॉन्ट : वैड्सवर्थ, 1998
2. स्टीवन एम० कैह्न एण्ड पीटर मैरिकल (सं०) : एथिक्स : हिस्ट्री, थ्योरी एण्ड कन्टेम्पोरारी इस्यूज़, न्यूयॉर्क : ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1998
3. हैन्स गेन्सलर : एथिक्स : कन्टेम्पोरारी रीडिन्ग्स, न्यूयॉर्क

INDIAN LOGIC
भारतीय तर्कशास्त्र
सेमेस्टर–II कोर पत्र
(PHI-C-207)
सप्तम पत्र

पूर्णांक–70+30 पाठ्यक्रमांश (क्रेडिट)–05 समय–3 घंटे

विद्यार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि वे नौ प्रश्नों में से
किन्हीं पाँच प्रश्नों का उत्तर दें।

1. तर्कशास्त्र, ज्ञानमीमांसा और तत्त्वमीमांसा में भारतीय मत के अनुसार संबंध; अपनी विचार–पद्धति की स्थापना एवं अन्य सभी प्रतिद्वंद्वी पद्धतियों के खण्डन में तर्क की प्राथमिकता; पूर्वपक्ष और सिद्धांत की पद्धति;
   a) ज्ञानमीमांसा के भाग के रूप में तर्क या अनुमान प्रमाण (प्रमाण शास्त्र)
   b) तत्त्वमीमांसा पर आधारित शास्त्र के रूप में तर्क या अनुमान प्रमाण (प्रमाण शास्त्र)
   c) हेतुविद्या या वाद्विद्या और आन्विक्षिकी के रूप में तर्क या अनुमान प्रमाण।
2. अनुमान की परिभाषा : न्याय और बौद्धों के परिप्रेक्ष्य।
3. अनुमान के अवयव : न्याय, बौद्ध, जैन और अद्वैत के परिप्रेक्ष्य।
4. अनुमान के प्रकार : न्याय, बौद्ध, जैन और अद्वैत के परिप्रेक्ष्य।
5. न्याय : पक्षता, परामर्श, व्याप्ति का परिभाषा।
6. भारतीय तर्कशास्त्र में आगमनात्मक तत्त्व : व्याप्तिग्रहोपाय का विचार, सामान्य लक्षण प्रत्यासत्ति।
7. हेत्वाभास।

अनुशंसित ग्रंथ (Suggested Readings) :–

1. K. N. Tiwari : Bhartiya Tarkasastra
2. Visvanatha : Bhasaparichheda
3. Annambhatta : Tarkasangraha
4. Dinnaga : Nyayapravesa
5. Dharmakirti : Nyayabindu
6. Vadideva Suri : Pramanyatattvalokalankara
7. Hemchandra : Pramanamimansa
8. Uddyotakara : Nyayavarttika
9. Jagadisa : Taramarit.

ENVIROMENTAL ETHICS
पर्यावरणीय आचारशास्त्र
सेमेस्टर–II कोर पत्र
(PHI-C-208)
अष्ठम पत्र

पूर्णांक–70+30 पाठ्यक्रमांश (क्रेडिट)–05 समय–3 घंटे

विद्यार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि वे नौ प्रश्नों में से
किन्हीं पाँच प्रश्नों का उत्तर दें।

1. पर्यावरण–दर्शन का स्वरूप एवं क्षेत्र : पर्यावरण, पारिस्थितिकी एवं पारिस्थितिकीय–दर्शन की अवधारणाएँ।
2. मानव–प्रकृति संबंध : शास्त्रीय पाश्चात्य चिन्तन : प्लेटो, अरस्तु; आधुनिक चिन्तन : डेकार्ट, रूसो, हीगल, गाँधी।
3. मानव–प्रकृति संबंध : भारतीय दार्शनिक परिप्रेक्ष्य : धार्मिक परिप्रेक्ष्य : ईसाईयत, इस्लाम, आदिवासी धर्म, हिन्दू, जैन, बौद्ध, सिक्ख धर्म
4. समकालीन दर्शन : पारिस्थितिकी–दर्शन की ओर आंदोलन, विज्ञान एवं मानव मूल्य, गहन पारिस्थितिकीय आंदोलन।
5. पारिस्थितिकीय समस्याएँ : जनसंख्या, संरक्षण, परिरक्षण, आनुवंशिकीय अभियांत्रिकी, परमाण्विक खतरे।
6. पर्यावरणीय आचारशास्त्र : उपयोगितावाद और कांटीय नैतिक सिद्धांत।

अनुशंसित ग्रंथ (Suggested Readings) :–

1. Peter Singer : Practical Ethics. Cambridge: Cambridge University Press 2011.
2. Singer, Peter. “Environmental Values". The Oxford Book of Travel Stories. Ed. Ian Marsh. Mel bourne, Australia: Longman Chesire, 1991
3. Attfield, Robin, The Ethics of Environmental Concern, Oxford: Basil Blackwell, 1983.
4. Benson, John, Environmental Ethics : An Introduction with Readings, London: Routledge, 2001.
5. Blackstone, William T., “Ethics and Ecology” in Blackstone, William T. (ed.), Philosophy and Environmental Crisis, Athens, University of Georgia Press, 1972
6. Boylan, Michael (ed.), Environmental Ethics, New Jersey : Prentice Hall, 2001
7. Carson, Rachel, Silent Spring, Boston: Houghton Mifflin, 1962

8. DesJardins, Joseph R., Environmental Ethics: An Introduction to Environmental Philosophy, Belmont CA : Wadsworth, 3rd ed., 2001).
9. Ehrlich, Paul, The Population Bomb, New York : Ballantine Books, 1968 - 11
10. Naess, Arne, “The Shallow and the Deep, Long-Range Ecology Movement. A Summary”, Inquiry 16 (1973): 95-100.
11. Naess, Arne, “The Deep Ecological Movement Some Philosophical Aspects”, Philosophical In quiry 8, (1986) : 1-2.
12. Schweitzer, Albert, (translated by Naish, John), Civilization and Ethics: the Philosophy of Civilization Part II, London : A & C Black Ltd, 1923.
13. Taylor, Paul W., Respect for Nature : A Theory of Environmental Ethics, Princeton NJ: Princeton University Press, 1986.
14. Zimmerman, Michael E.; Callicott, J. Baird; Sessions, George; Warren, Karen J.; and Clark, John (eds.), Environmental Philosophy : From Animal Rights to Radical Ecology, New Jersey: Prentice Hall, 2nd ed., 1998.

MODERN INDIAN THOUGHT
आधुनिक भारतीय चिंतन
सेमेस्टर–III ओपन इलेक्टिव
(PHI-O-309)
नवम पत्र

पूर्णांक–70+30 पाठ्यक्रमांश (क्रेडिट)–05 समय–3 घंटे

विद्यार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि वे नौ प्रश्नों में से
किन्हीं पाँच प्रश्नों का उत्तर दें।

1. आधुनिक भारतीय चिन्तन : पृष्ठभूमि एवं मुख्य विशेषताएँ।
2. स्वामी विवेकानन्द : सार्वभौम धर्म।
3. श्री अरविन्द : समग्र योग।
4. मोहम्मद इकबाल : पूर्ण मानव।
5. रवीन्द्रनाथ टैगोर : मानव–धर्म।
6. एस० राधाकृष्णन् : बुद्धि और अंतःप्रज्ञा।
7. विनोबा भावे : भूदान आंदोलन।
8. मो० क० गाँधी : सत्य और अहिंसा
9. बी० आर० अम्बेडकर : नव–बौद्धवाद।

अनुशंसित ग्रंथ (Suggested Readings) :–

1. लाल, बी० के० : समकालीन भारतीय दर्शन, मोतीलाल बनारसीदास
2. नरवणे : समकालीन भारतीय चिन्तन, राजकमल
3. सिन्हा, आ०सी० एवं विजयश्री : समकालीन भारतीय चिन्तन, डी० के० प्रिन्टवर्ल्ड

PHENOMENOLOGY AND EXISTENTIALISM
फेनोमेनोलॉजी और अस्तित्ववाद
सेमेस्टर–III कोर पत्र
(PHI-C-310)
दशम पत्र

पूर्णांक–70+30 पाठ्यक्रमांश (क्रेडिट)–05 समय–3 घंटे

विद्यार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि वे नौ प्रश्नों में से
किन्हीं पाँच प्रश्नों का उत्तर दें।

भाग–I : फेनोमेनोलॉजी

1. फेनोमेनोलॉजी : एक वैचारिक आंदोलन के रूप में, अनुसंधान की एक मूलगामी पद्धति के रूप में, एक पूर्वमान्यतारहित दर्शन के रूप में।
2. एडमंड हुसर्ल : प्राकृतिक जगत् की धारणा, सारतत्त्व एवं सारभूत अंतःप्रज्ञा, नोयमा और नोयसिस, फेनोमेलॉजिकीय रिडक्शन एवं उसके चरण, शुद्ध चेतना एवं अनुभवातीत विषयिता, चेतना की विषयापेक्षा।
3. हाइडेगर : सत् (बीइंग), मानव–सत्ता (डिसाइन)
4. मॉर्लो–पांती : प्रत्यक्षीकरण की फेनोमेनोलॉजी।

भाग–II : अस्तित्ववाद

1. अस्तित्ववाद : इसकी विशिष्टताएँ, प्रकार; अस्तित्ववादियों के सामान्य आधार और उनकी मतविभिन्नता।
2. कुछ बारंबार आनेवाले विषय : अस्तित्व का सार का पूर्वगामी होना; मानव की जगत्–में–स्थित–सत्ता, मानव की देह–में–स्थित–सत्ता, मानव की अन्य–सह–सत्ता
3. स्वतंत्रता, निर्णय और चुनाव।
4. अस्तित्व की तथ्यता, मृत्यु, कालिकता।
5. अस्तित्व : प्रमाणिक एवं अ–प्रामाणिक।

अनुशंसित ग्रंथ (Suggested Readings) :–

1. Herbert Spiegelberg: The Phenomenological Movement, Vols. I & II, The Hague:Martinus Nijhoff, 1971.
2. Paul Ricoeur: Husserl: An Analysis of his Phenomenology. Tr. G. Ballard & Lester
3. Embree, Evaston: North Western University Press, 1967.

4. Marvin Farber: The Aims of Phenomenology, New York: Harper Row, 1966.
5. M. K. Bhadra: A Critical Survey of Phenomenology and Existentialism, New Delhi: ICPR, 1990.
6. Edmund Husserl: Ideas: A General Introduction to Pure Phenomenology, Tr. W. R. 14
7. Boyce Gibson, London: George Allen & Unwin Ltd., 1931.
8. Edmund Husserl: Experience and Judgment, Trs. James Churchill& Karl Americks, London: Routledge & Kegan Paul, 1973.
9. Maurice Merleau-Ponty: Phenomenology of Perception, Tr. Colin Smith, London: Routledge & Kegan Paul, 1962.
10. Maurice Merleau-Ponty: The Primacy of Perception, Tr. James E. Edie, Evanston: North-Western University Press, 1964.
11. Jean-Paul Sartre: The Transcendence of the Ego, Tr. F. Williams & R. Kirkpatrick, New York: Noonday Press, 1957.
12. Jean-Paul Sartre: The Psychology of Imagination, Tr. B. Frechtman, London: Rider Press. 1949.
13. Jean-Paul Sartre: Being and Nothingness, Tr. Hazel Barnes, New York: Philosophical Library, 1956.
15. Martin Heidegger: Being and Time, Tr. John Macquarrie & Edward Robinson, Oxford: Basil Blackwell, 1978.
16. Martin Heidegger: Introduction to Metaphysics, Tr. R. Mannheim, New York: Doubleday Anchor, 1961.
17. Soren Kierkegaard: Concluding Unscientific Postscript, Tr. D. F. Swenson, Princeton, 1941.
18. Jean-Paul Sartre: Being and Nothingness: An Essay on Phenomenological Ontology, Tr. H. E. Barnes, London, 1957.
19. Walter Kaufmann (Ed): Existentialism from Dostoevsky to Sartre, New York, 1956.
20. H. J. Blackham: Six Existentialist Thinkers, New York, 1959.
21. H. E. Barnes: An Existentialist Ethics, New York 1967.
22. William A. Luitfen: Existentialist Phenomenology, (revised edition), Tr. Henry J. Koren, Pittsburgh: Duquesne University Press, 1960.

ANALYTIC PHILOSOPHY
विश्लेषणात्मक दर्शन
सेमेस्टर–III कोर पत्र
(PHI-C-311)
एकादश पत्र

पूर्णांक–70+30 पाठ्यक्रमांश (क्रेडिट)–05 समय–3 घंटे

विद्यार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि वे नौ प्रश्नों में से
किन्हीं पाँच प्रश्नों का उत्तर दें।

1. जी० ई० मूर : प्रत्ययवाद का खण्डन।
2. बी० रसेल : परिचयात्मक ज्ञान एवं विवरणात्मक ज्ञान, तर्कीय अणुवाद।
3. ए० जे० एयर : अर्थ का सत्यापन सिद्धांत, तत्त्वमीमांसा का खण्डन, दर्शन का कार्य।
4. गिलबर्ट राईल : कोटि दोष, कैसे–जानना और जानना–कि
5. एल० विट्गेन्स्टाइन : अर्थ और प्रयोग, भाषा–खेल और पारिवारिक सादृश्य, नियम–पालन, निजी भाषा, व्याकरण एवं जीवन के रूप।
6. जे० एल० आस्टिन : वाक्–क्रिया, संपादनसूचक एवं स्थिरार्थक।
7. क्वाइन : टू डोग्मास ऑफ इम्पिरिशिज्म।

अनुशंसित ग्रंथ (Suggested Readings) :–

1. Michael Davitt & Kim Sterelney : Language and Reality, MIT Press, 1987
2. P. Martinich : The Philosophy of Language, OUP, 1996.
3. Russell : Logic and Knowledge. Routledge, London.
4. Russell : The Problems of Philosophy. Oxford University Press.
5. Russell : An Inquiry into Meaning and Truth, Pelican Book.
6. A. J. Ayer : Language, Truth and Logic. Penguin Books.
7. Gilbert Ryle : The Concept of Mind. Penguin Books.
8. G. E. Moore : Philosophical Studies. 1922.
9. B. Russell & A. N. Whitehead : Principia Mathematica (Three Volumes)
10. L. Wittgenstein : Philosophical Investigations.
11. J. L. Austin : How to Do Things with Words.
12. Quine : 'Word and Object' and 'Two Dogmas of Empiricism'.

WESTERN LOGIC
पाश्चात्य तर्कशास्त्र
सेमेस्टर–III कोर पत्र
(PHI-C-312)
द्वादश पत्र

पूर्णांक–70+30 पाठ्यक्रमांश (क्रेडिट)–05 समय–3 घंटे

विद्यार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि वे नौ प्रश्नों में से
किन्हीं पाँच प्रश्नों का उत्तर दें।

1. निगमन की विधि : वैधता का आकारिक प्रमाण, प्रतिस्थापन के नियम, अवैधता का प्रमाणीकरण, सोपाधिक प्रमाण का नियम, अप्रत्यक्ष प्रमाण का नियम, पुनरूक्ति के प्रमाण, सोपाधिक प्रमाण का सबल नियम, संक्षिप्त सत्यता–सारणी तकनीक, व्याधात–प्रदर्शन विधि।
2. सत्यता–फलनीय तर्कशास्त्र की प्रारंभिक अवधारणाएँ और सिद्धांत, प्रतीकीकरण के तकनीक, प्रमाण–रचना।
3. परिमाणन सिद्धांत : सरल एवं सामान्य प्रतिज्ञप्ति, बहु–सामान्य प्रतिज्ञप्ति, प्रतीकीकरण के तकनीक, परिमाणन के नियम, प्रमाण–रचना, परिमाणकों में निहित तार्किक सत्यता।
4. संबंधों का तर्कशास्त्र : संबंधों का प्रतीकीकरण।

अनुशंसित ग्रंथ (Suggested Readings) :–

1. Irving M. Copi : Symbolic Logic (6th Edition).
2. Richard Jeffrey : Formal Logic: Its Scope and Limits (2nd Edition).
3. A. N. Prior : Formal Logic.
4. Patrick Suppes : Introduction to Logic, Part II : Elementary Intuitive Set Theory
5. Singh & Goswami : Fundamentals of Logic.

SANKHYA & YOGA
सांख्य और योग
सेमेस्टर–IV इलेक्टिव थ्योरी
(PHI-E-413) ग्रुप–'बी'
त्रयोदश पत्र

पूर्णांक–70+30 पाठ्यक्रमांश (क्रेडिट)–05 समय–3 घंटे

विद्यार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि वे नौ प्रश्नों में से
किन्हीं पाँच प्रश्नों का उत्तर दें।

भाग–I :

1. त्रिविध दुःख; प्रमाण : उनका स्वरूप एवं विषय; प्रकृति एवं विकृति; मूलप्रकृति और उसका सूक्ष्म स्वरूप; मूलप्रकृति के अस्तित्व हेतु प्रमाण; सत्कार्यवाद।
2. व्यक्त, अव्यक्त और पुरुष के मध्य विभेद; गुण : सत्व, रजस, तमस एवं उनकी विशेषताएँ; उनकी पारस्परिक विरोधिता एवं पूरकता।
3. पुरुष : स्वरूप, अस्तित्व एवं बहुलता हेतु प्रमाण; प्रकृति से सर्ग के द्विविध प्रयोजन; प्रकृति से तेइस तत्त्वों का क्रमबद्ध विकास।
4. बंधन और मुक्ति।
5. ईश्वर की अवधारणा से रहित सांख्य–तंत्र की सामान्य संरचना; सांख्य एवं योग के मध्य नजदीकी संबंध।

भाग–II :

1. चित्तवृत्ति : चित्तवृत्तिनिरोध के रूप में योग : वृत्तियाँ, प्रमाण, विपर्यय, विकल्प, निद्रा, स्मृति; अभ्यास और वैराग्य द्वारा उनका नियंत्रण।
2. दो प्रकार की समाधि (संप्रज्ञात एवं असंप्रज्ञात); ईश्वर का स्वरूप; चित्तविक्षेप और उनपर नियंत्रण की पद्धति; सबीज और निर्बीज समाधि।
3. पंचक्लेश और उनकी प्रकृति; कैवल्य की ओर ले जानेवाला अष्टांग–योग : यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि।
4. चित्त पर नियंत्रण से फलित अष्ट–सिधियाँ; सिद्धियों के पारगमन के फलस्वरूप कैवल्य की प्राप्ति; धर्ममेघ समाधि : कैवल्य का स्वरूप।

अनुशंसित ग्रंथ (Suggested Readings) :–

1. ईश्वरकृष्ण : सांख्यकारिका
2. व्यास : योगसूत्रभाष्य

PHILOSOPHY OF RELIGION

धर्म–दर्शन

सेमेस्टर–IV इलेक्टिव थ्योरी

(PHI-E-414) ग्रुप–'बी'

चतुर्दश पत्र

पूर्णांक–70+30 पाठ्यक्रमांश (क्रेडिट)–05 समय–3 घंटे

विद्यार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि वे नौ प्रश्नों में से
किन्हीं पाँच प्रश्नों का उत्तर दें।

1. संक्षेप में विश्व के जीवंत धर्मों की प्रमुख विशेषताएँ : हिन्दू, बौद्ध, जैन, सिक्ख, पारसी, यहूदी, ईसाई तथा इस्लाम धर्म।
2. विविध धर्मों में ईश्वर–मानव संबंध; विभिन्न धर्मों में विश्व–दृष्टियाँ; अशुभ की समस्या।
3. ईश्वर के अस्तित्व हेतु युक्तियाँ : सत्तामूलक, प्रयोजनमूलक, विश्वमूलक तथा नैतिक युक्तियाँ।
4. विभिन्न धर्मों में अमरता, मुक्ति और मानव नियति।
5. अंतर–धार्मिक संवाद और समझ; सार्वभौम धर्म की संभावना।
6. धर्मनिरपेक्षतावाद।

अनुशंसित ग्रंथ (Suggested Readings) :–

1. Masih,Yakub- Samkalin Dharmadarshan.
2. Masih,Yakub- Samanya Dharmadarshan.
3. Masih,Yakub Tulnatmak Dharmadarshan.
4. Hick, John An Interpretation of Religion.

ETHICS AND SOCIETY
आचारशास्त्र और समाज
सेमेस्टर–IV, इलेक्टिव थ्योरी
(PHI-E-415) ग्रुप–'बी'
पंचदश पत्र

पूर्णांक–70+30 पाठ्यक्रमांश (क्रेडिट)–05 समय–3 घंटे

विद्यार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि वे नौ प्रश्नों में से
किन्हीं पाँच प्रश्नों का उत्तर दें।

भाग–I :

1. व्यक्ति एवं सामाजिक नैतिकता।
2. यूनानी परिप्रेक्ष्य : प्लेटो : मानवीय आत्मा एवं समाज की संरचना; अरस्तु : नैतिक सद्गुण।
3. कांट : व्यक्ति या पुरुष का सम्मान।
4. एन्नेट्टे बेयर : नारीवादी आचारशास्त्र।

भाग–II :

1. यौन नैतिकता : पक्ष एवं विपक्ष
2. गर्भपात : पक्ष एवं विपक्ष
3. इच्छा–मृत्यु : पक्ष एवं विपक्ष
4. मृत्यु–दण्ड : पक्ष एवं विपक्ष
5. पशु अधिकार : पक्ष एवं विपक्ष

अनुशंसित ग्रंथ (Suggested Readings) :–

Cahn & Markie (Eds) : Ethics : History , Theory and Contemporary Issues, New York, Oxford University Press, 1998.

Louis P. Pojman : (Rd) : Ethical Theory : Classical and Contemporary Readings.

Belmont : Wadsworth, 1998.

Jeffrey Olen & Vincent Barry (Eds) : Applying Ethics.

Rajendra Prasad : Karma, Causation and Retributive Morality.

Saral Jhingran : Aspects of Hindu Morality.

SIXTEENTH PAPER

षोडश पत्र

सोलहवें (षोडश) पत्र के अंतर्गत दो विकल्प होंगे। विद्यार्थियों को निम्नलिखित दो विकल्पों में से किसी एक का चुनाव करना है :

1. लघु शोध–प्रबंधक (Dissertation)
2. मूल्य–शिक्षा (value education)

DISSERTATION

लघु शोध–प्रबंध

सेमेस्टर–IV

(PHI-V-416) ग्रुप–'बी'

षोडश पत्र

पूर्णांक–70+30 पाठ्यक्रमांश (क्रेडिट)–05 समय–3 घंटे

इस पत्र में विद्यार्थी को एक लघु शोध–प्रबंध तैयार करके विभागाध्यक्ष के पास विश्वविद्यालय के चतुर्थ सेमेस्टर की परीक्षा में मूल्यांकन हेतु जमा करना होगा।

प्रत्येक विद्यार्थी के लिए लघु शोध–प्रबंध के विषय की घोषणा विभागाध्यक्ष द्वारा चतुर्थ सेमेस्टर के प्रारंभ में की जाएगी।

लघु शोध–प्रबंध का लिखित अंश 70 अंकों का होगा। इस अंश में उत्तीर्णांक 28 होगा। इस पत्र में एक मौखिकी भी होगी जिसमें उत्तीर्णांक 12 होंगे।

VALUE EDUCATION

मूल्य–शिक्षा

सेमेस्टर–IV

(PHI-V-416) ग्रुप–'बी'

षोडश पत्र

पूर्णांक–70+30 पाठ्यक्रमांश (क्रेडिट)–05 समय–3 घंटे

विद्यार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि वे नौ प्रश्नों में से
किन्हीं पाँच प्रश्नों का उत्तर दें।

1.	मूल्य–शिक्षा	:	मूल्य और शिक्षा का अंतर्संबंध; मूल्य–शिक्षा का स्वरूप, महत्त्व एवं उद्देश्य; आचारशास्त्र और शिक्षा : अच्छे जीवन का विचार, सद्‌गुण आचारशास्त्र, व्यक्तिगत् एवं सामाजिक सद्‌गुण
2.	मूल्य एवं मूल्य के प्रकार	:	मूल्य का अर्थ एवं अवधारणा; मूल्य के विभिन्न प्रकार; सार्वभौमिक एवं केन्द्रीय मूल्य
3.	मूल्यों की बहुलता	:	मूल्यों की बहुलता एवं सापेक्षिकता, मूल्यों का सोपानक्रम; साधन एवं साध्य मूल्य
4.	मूल्य शिक्षण के उपागम	:	विभिन्न विषयों के पाठ्यक्रम में आचारशास्त्र को शामिल करना; कविता–कहानी, महापुरुषों की जीवनी, तथा श्रेण्य ग्रंथों के माध्यम से मूल्य–शिक्षण; अनुप्रयुक्त एवं वृत्तिपरक आचारशास्त्र की शिक्षा; चरित्र–निर्माण, नागरिक मूल्य एवं मूल कर्त्तव्य।